मेहनतकशों का पैग़ाम मेहनतकशों के नाम

मज़दूर मोर्चा

साप्ताहिक

Email : mazdoormorcha365@gmail.com
www.mazdoormorcha.com

Postal Reg. No. L-2/FBD/463/2020-22 /R.N.I. No. 66400/97

फरीदाबाद में तैनात रहे संजीव कौशल बने हरियाणा के मुख्य सचिव	3
कांग्रेस आगामी विधानसभा सेशन में काम रोको प्रस्ताव लाएगी	4
अफ्स्पा निरस्त कर नगालैंड हत्याकांड के जिम्मेदार सैनिकों पर सरकार मुकदमा चलाए	5
तीन साल बाद जेल से रिहा हुई एक्टिविस्ट सुधा भारद्वाज	6
मोदी समर्पण और सत्ता समीकरण	8

वर्ष 36 अंक 05 फरीदाबाद 12-18 दिसम्बर 2021 फोन-8851091460 3.00 ₹

दूसरों को नसीहत खुद मियां फजीहत

अवैध निर्माण के लिए सील किये गये संतोष अस्पताल की सरकारी सील तोड़ने की खुशी में निगमायुक्त यशपाल भी शरीक हुये

फ़रीदाबाद (म.मो.)। मुख्यमंत्री फ्लाईंग द्वारा जनवरी 2021 में निर्माण संबंधी अनियमितताओं के चलते सील किये गये संतोष अस्पताल एनएच तीन एफ़ 138/139 के खुले होने की घोषणा करने पांच दिसम्बर 2021 को खुद निगमायुक्त यशपाल यादव इस अस्पताल में पधारे। उनके पधारने को सार्वजनिक करने के लिये अस्पताल मालिक ने ऊपर दिया फ़ोटो मीडिया द्वारा सार्वजनिक किया ताकि तमाम निगम कर्मचारियों व जनता को पता चल जाये कि इस अस्पताल पर 'वैधता' की मुहर लग चुकी है।

वैसे यह अस्पताल सील किये जाने के बावजूद कोरोना लहर में पूरे जोर-शोर से शहरवासियों को लूटने में जुटा रहा। उस दौरान यहां 75000 रुपये प्रति बिस्तर के हिसाब से मरीज़ों को लिटा कर केवल ऑक्सीजन दी जाती थी, डॉक्टर व नर्सिंग स्टाफ़ किन्हीं अन्य अस्पतालों से आते थे, वे भी मात्र दिखावे भर को। पांच-सात दिन रखने के बाद ये लोग अपने मरीज़ को गंभीर बता कर जहां-तहां रैफ़र कर देते थे। उस आपात स्थिति में यहां 70-80 मरीज़ हमेशा दाखिल रहते थे। इसका मतलब 60-70 लाख की आय रोजाना पक्की। इस बाबत शिकायत तत्कालीन उपायुक्त और आज के निगमायुक्त यशपाल यादव को की गयी थी जिस पर कोई कार्यवाही नहीं हुई थी।

निगमायुक्त यशपाल यादव पूरे शहर में अवैध कब्जे एवं निर्माण हटाने की नसीहत के साथ-साथ अपनी प्रशासकीय शक्ति का प्रयोग भी कर रहे हैं। बीते दिनों शहर भर में कई दुकानों के सामने लगे टीन शेड तोड़ डाले, सामने पड़े सामान व रेहड़ी आदि को हटवाया। यह अच्छी बात है। इससे पैदल चलने वालों को फुटपाथ नसीब हो सकती है। बशर्ते कि कुछ दिन बाद ये अवैध कब्जे फिर से न हो जायें। वैसे नि:संदेह ये कब्जे बहुत जल्द होने वाले हैं। इसके अलावा रेहड़िया भी इसी तरह लगती रहेंगी जब तक उनके लिये बाकायदा कोई स्थान बतौर रेहड़ी मार्किट तय न कर दिया जाये।

महत्वपूर्ण सवाल यह उठता है कि लोग प्रशासन के आदेश को मानते क्यों नहीं, बार-बार तोड़फोड़ करने के बावजूद लोग फिर से वहीं कब्जे क्यों कर लेते हैं? इसका एकमात्र कारण अधिकारियों में निष्ठा का नितांत अभाव तथा अपनी शक्तियों के प्रयोग से लूट कमाई करना है। अधिकारी चाहते हैं कि जो इनके चहेते हों उन्हें रिश्वत दी जाये या किसी की सिफारिश लगवा दें तो अवैध भी वैध हो जाता है।

इसका सर्वोत्तम उदाहरण नम्बर 3 में बना संतोष अस्पताल है। तीन रिहायशी मकानों को तोड़कर करीब 450 वर्ष गज में पूर्णतया अवैध रूप से बना यह अस्पताल, स्थानीय लोगों की शिकायत पर सीएम फलाईंग स्कवाड द्वारा जनवरी 2021 में सील कर दिया गया था। स्टिल पार्किंग को भी इस्तेमाल में ले लेने के चलते इसे पांच मंजिला कहा जायेगा। इतना ही नहीं करीब 7 फुट तक इसकी सीढ़ियां सड़क पर आई हुई हैं। उसके बाद इनका जनरेटर सेट व बड़ा ट्रांसफार्मर भी सड़क घेरे हुए है। अस्पताल में आने वाले तमाम वाहनों को तो सड़क पर पार्किंग करने का जन्म सिद्ध अधिकार स्वयं मिल ही जाता है। जाहिर है प्रशासनिक सहयोग के चलते अस्पताल की इस दादागिरी से सड़क पर आवागमन कठिन हो जाता है। जाम पर जाम लगते रहते, लेकिन किसे परवाह है इसकी, जनता भुगतती है तो भुगते।

गरीब लोग़ों को लूटने के लिये पुलिस ने पाल रखे हैं दल्ले

फ़रीदाबाद (म.मो.) कच्ची बस्तियों में, जहां ग़रीब मेहनतकश लोग अपने छोटे-मोटे धंधे करके गुजर-बसर करते हैं उन्हें ठगने व लूटने के लिये कई इलाको में स्थानीय पुलिस ने अपने दल्ले छोड़े हुए हैं। ऐसी ही एक बस्ती कृष्णा नगर निकट बाटा फ्लाई ओवर जो पुलिस चौकी डीएलएफ़ 11 एवं थाना सेक्टर 7 के इलाके में पड़ती है, का मामला प्रकाश में आया है। कॉलोनी में रहने वाले राधेश्याम के पास 18 नवम्बर को पुलिस चौकी से एक पुलिस वाला आकर कहता है कि उसके खिलाफ़ शिकायत आई है कि उसने अपनी गाड़ी से एक एक्सिडेंट कर दिया है, इसलिये अपनी गाड़ी को चौकी लेकर चलो। राधेश्याम ने कहा कि उसके घर में खड़ी यह गाड़ी तो चलने लायक ही नहीं है, कई महीनों से ज्यों की त्यों खड़ी है तो इससे एक्सिडेंट कैसे हो सकता है? पुलिस द्वारा धमकाने व डराने के चलते राधेश्याम ने कार पर जमीं धूल की मोटी परत साफ़ की व इंजन को स्टाट कराने के लिये कुछ पैसे देकर एक मिस्त्री को बुलाया।

गाड़ी लेकर करीब 12 बजे जब राधेश्याम चौकी पहुंचा तो वहां मौजूद एएसआई दर्शनलाल ने कहा कि गाड़ी की आरसी दिखाओ। इसे देखने के बाद एएसआई ने कहा कि यह गाड़ी तो 15 साल से अधिक पुरानी है इसलिये इसको इन्पाऊंड करेंगे। राधेश्याम ने कहा कि उसे पता है कि गाड़ी सड़क पर नहीं चलाई जा सकती इसलिये उसने इसे घर में ही खड़ा कर रखा है, सौदा होने पर किसी कबाड़ी को बेच देगा। लेकिन दर्शन लाल की नीयत तो रिश्वत वसूलने की थी इसलिये वह कोई तर्क सुनने की अपेक्षा उसे डराने में ही लगा रहा। करीब छ: बजे दर्शन लाल को किसी तरह पता चल गया कि कोई पत्रकार भी इस मामले पर नज़र रखे हुए है तो उसने तुरन्त राधेश्याम का मोबाइल फ़ोन छीन लिया। रात करीब साढे नौ बजे राधेश्याम को गाड़ी सहित तब जाने दिया जब उसने अपने दल्ले आरसी शेखर के माध्यम से 12 हजार रुपये की वसूली कर ली।

दरअसल हुआ यूं था कि आरसी शेखर जो पुलिस के लिये मुखबरी व दलाली का धंधा करता है तथा इसी की आड़ में कॉलोनी में नेतागिरी भी चलाता है, ने पुलिस को बतौर शिकार राधेश्याम की पुरानी गाड़ी के बारे में सूचना देकर यह सारा षड़यंत्र रचा था। इस तरह के नेता सदैव सत्तारूढ़ दल का नकाब पहनकर जनता को ठगते हैं। आरसी शेखर अपने आपको भाजपा का नेता बताता है।

बाद में यही शेखर राधेश्याम का मददगार बन कर, पुलिस से छुटवाने पुलिस चौकी भी पहुंच गया। अपने धंधे के मुताबिक उसने राधेश्याम व एएसआई दर्शनलाल के बीच सौदेबाज़ी करके नकद 12 हज़ार रुपये राधेश्याम से ले कर दर्शन लाल को देकर उसे छुड़वाया।

पुलिस का पक्ष जानने के लिये इस संवाददाता ने 19 तारीख को चौकी इंचार्ज प्रदीप मोर से फ़ोन पर बात की तो उन्होंने साफ़ कहा कि वे शाम को चौकी से जाते वक्त दर्शन लाल को कह गए थे कि गाड़ी को छोड़ दो। इसके बावजूद भी किसी ने 12 हजार ले लिये हों तो वे इसकी जांच करेंगे। वह जांच अभी तक जारी है, जिसका कोई परिणाम आता नजर नहीं आ रहा। हां, पत्रकार के पास जाने के कारण राधेश्याम पर इतना दबाव बना दिया गया है कि वह पुलिस एवं उसके दल्ले आरसी शेखर की दहशत के मारे कहीं भी कोई लिखित शिकायत देने की हिम्मत नहीं कर पा रहा है। **'मज़दूर मोर्चा'** के पास आरसी शेखर व राधेश्याम के बीच हुई टेलिफोनिक वार्ता की वह रिकॉर्डिंग मौजूद है जिसमें उक्त राशि लिये-दिये जाने की बात कही गई है। इसमें आरसी शेखर राधेश्याम से यह भी कहता है कि वह पत्रकार को हड़का दे, धमका कर कह दे कि वह हमारे बीच में न पड़े। रहना तो यहां हमें और तुम्हें ही है।

पुलिस की ऐसी लूट लगभग हर क्षेत्र में ऐसे ही चलती रहती है जिसे कोई रोकने-टोकने वाला नहीं है। सवाल उन अधिकारियों पर भी बनता है जो चौकी व थानों की सुपरविजन के लिये तैनात किये गये हैं।